



प्राचीन भारत का इतिहास

Ancient Indian History



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

★ EXAMS ★



RAS PRELIMS



RAS MAINS



REET



VDO



LDC / Clerk



Police / SI



CET



Other Competitive Exams



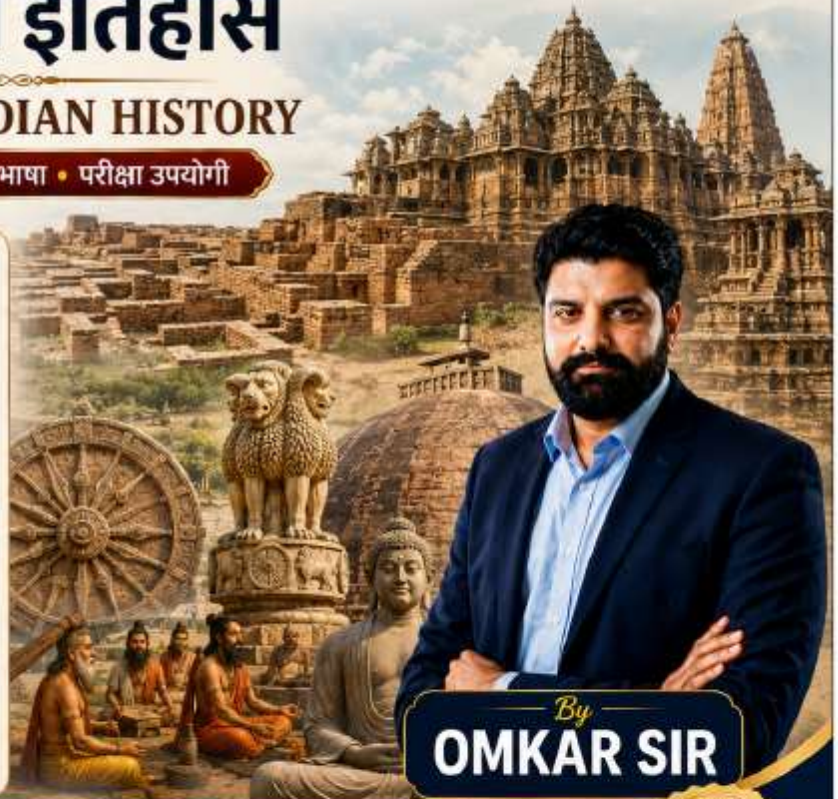
प्राचीन भारत का इतिहास

ANCIENT INDIAN HISTORY

संपूर्ण कवरेज • सरल भाषा • परीक्षा उपयोगी

CHAPTERS

- 01 प्रागैतिहासिक भारत (Prehistoric India)
- 02 सिंधु सभ्यता (Indus Civilization)
- 03 वैदिक काल (Vedic Age)
- 04 जैन एवं बौद्ध धर्म (Jainism & Buddhism)
- 05 महाजनपद एवं मगध (Mahajanapadas & Magadha)
- 06 मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)
- 07 मौर्योत्तर काल (Post-Mauryan Age)
- 08 गुप्त साम्राज्य (Gupta Empire)
- 09 गुप्तोत्तर काल एवं हर्ष (Post-Gupta & Harsha)
- 10 संगम युग एवं दक्षिण भारत (Sangam Age & South India)



By
OMKAR SIR



सरल भाषा में
संपूर्ण कवरेज



परीक्षा की दृष्टि से
महत्वपूर्ण बिंदु



चार्ट, मैप और
टाइमलाइन सहित



पूर्व परीक्षा प्रश्न
शामिल



सभी प्रतियोगी
परीक्षाओं के लिए उपयोगी



प्राचीन भारत (Ancient India)

अध्याय 1 से 10 | प्रागैतिहासिक काल से संगम युग तक

UPSC IAS Prelims + Mains | RAS Pre + Mains | All Competitive Exams

क्यों पढ़ें प्राचीन भारत का इतिहास? (Why Study Ancient India?)

कल्पना कीजिए — आप एक ऐसी मशीन में बैठे हैं जो आपको समय में पीछे ले जा सकती है। आप 25 लाख वर्ष पीछे जाकर एक आदिमानव को पत्थर का हथियार बनाते देखते हैं, फिर कुछ लाख वर्ष आगे बढ़कर मोहनजोदड़ो की सुनियोजित गलियों में टहलते हैं, फिर वैदिक ऋषियों के मंत्रोच्चार सुनते हैं, बुद्ध व महावीर के उपदेश सुनते हैं, अशोक को कलिंग युद्ध के बाद पश्चाताप करते देखते हैं, आर्यभट्ट को शून्य की खोज करते देखते हैं, और अंत में मदुरै के एक भव्य सभागार में तमिल कवियों को अपनी रचनाएँ सुनाते सुनते हैं। यही है — प्राचीन भारत का इतिहास — मानव सभ्यता की सबसे रोमांचक, सबसे विविधतापूर्ण व सबसे प्रेरणादायक यात्राओं में से एक।

परीक्षा की दृष्टि से देखें तो प्राचीन भारत का इतिहास UPSC IAS व RAS दोनों परीक्षाओं के Prelims व Mains — दोनों चरणों में भारी वेटेज रखता है। हर वर्ष सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई, मौर्य-गुप्त प्रशासन, बौद्ध-जैन दर्शन व नवीनतम पुरातात्विक खोजों (जैसे राखीगढ़ी, कीलाडी) से सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। परंतु इससे भी बड़ी बात यह है कि प्राचीन भारत को समझे बिना न तो मध्यकालीन भारत को ठीक से समझा जा सकता है, न ही आधुनिक भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को — क्योंकि आज भी हमारी भाषाएँ, हमारे त्योहार, हमारी सोच का एक बड़ा हिस्सा उसी प्राचीन विरासत से जुड़ा है।

इस पुस्तक के भाग A में आपको प्रागैतिहासिक पाषाण युग से लेकर संगम युग तक — कुल 10 अध्यायों में — भारत की संपूर्ण प्राचीन यात्रा मिलेगी। हर अध्याय एक कहानी से शुरू होता है, ताकि विषय में रुचि बनी रहे, फिर गहन शोध-आधारित तथ्यों, तालिकाओं, तुलनाओं व परीक्षा-उन्मुख (exam-oriented) कोणों के साथ आगे बढ़ता है। हर अध्याय में UPSC व RAS दोनों परीक्षाओं के अनुसार उत्तर-लेखन के प्रारूप, महत्वपूर्ण तथ्य व पिछले वर्षों के प्रश्न भी सम्मिलित हैं — ताकि आप न केवल विषय को समझें, बल्कि परीक्षा में उसका सटीक उपयोग भी कर सकें। तो आइए, समय की इस यात्रा को शुरू करते हैं।

भाग A: प्राचीन भारत — अध्याय-सूची (Table of Contents)

अध्याय 01. प्रागैतिहासिक भारत एवं इतिहास के स्रोत Prehistoric India & Sources of History — पाषाण युग, भीमबेटका-मेहरगढ़, इतिहास-लेखन के स्रोत

अध्याय 02. सिंधु घाटी सभ्यता Indus Valley Civilization — हड़प्पा-मोहनजोदड़ो-धोलावीरा, नगर-नियोजन, लिपि, राखीगढ़ी DNA अध्ययन

अध्याय 03. वैदिक काल Vedic Age — ऋग्वैदिक व उत्तर वैदिक समाज-राजनीति-धर्म, आर्य विवाद, उपनिषद दर्शन

अध्याय 04. जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म Jainism & Buddhism — महावीर, बुद्ध, त्रिरत्न, अष्टांगिक मार्ग, बौद्ध संगीतियाँ

अध्याय 05. महाजनपद एवं मगध का उदय 16 Mahajanapadas & Rise of Magadha — हर्यक-शिशुनाग-नंद वंश, फारसी-यूनानी आक्रमण

अध्याय 06. मौर्य साम्राज्यMauryan Empire — चंद्रगुप्त-चाणक्य, अशोक का धम्म, सप्तांग प्रशासन, पतन

अध्याय 07. मौर्योत्तर कालPost-Mauryan Age — शुंग-कण्व, इंडो-ग्रीक, शक-कुषाण (कनिष्क), सातवाहन

अध्याय 08. गुप्त साम्राज्य — स्वर्ण युगGupta Empire — Golden Age — समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, आर्यभट्ट, कालिदास, हूण आक्रमण

अध्याय 09. गुप्तोत्तर काल एवं हर्षवर्धनPost-Gupta & Harshavardhana — मौखरि, हर्ष, चालुक्य-पल्लव, ह्वेनसांग विवरण

अध्याय 10. संगम युग एवं दक्षिण भारतSangam Age & South India — चोल-चेर-पांड्य, संगम साहित्य, इंडो-रोमन व्यापार, कीलाडी उत्खनन

नोट: भाग B — मध्यकालीन भारत (राजपूत काल से मराठा साम्राज्य तक, अध्याय 11-20) आगामी अध्यायों में सम्मिलित किया जाएगा।



📋 विषय-सूची (Index)

1. भूमिका — इतिहास की खोज की कहानी (Hook Story)
2. इतिहास के स्रोत क्या होते हैं? (What are Sources of History)
3. पुरातात्विक स्रोत — उत्खनन, अभिलेख एवं मुद्राशास्त्र (Archaeological Sources)
4. साहित्यिक स्रोत — धार्मिक ग्रंथ एवं विदेशी विवरण (Literary Sources)
5. काल-निर्धारण की विधियाँ (Dating Methods: BC/AD/BCE/CE/BP)
6. प्रागैतिहासिक काल का त्रि-युगीय वर्गीकरण (Three Age System)
7. पुरापाषाण काल (Palaeolithic Age)
8. मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age)
9. नवपाषाण काल (Neolithic Age) — कृषि क्रांति
10. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age)
11. प्रमुख पुरास्थल — गहराई से अध्ययन (भीमबेटका, मेहरगढ़, बुर्जहोम, सिनौली, राखीगढ़ी)
12. विवाद एवं नवीनतम शोध — आर्य विवाद तथा राखीगढ़ी DNA अध्ययन
13. तुलनात्मक अध्ययन तालिका (सभी युगों की तुलना)
14. उत्तर लेखन कोण (Mains Answer Writing — UPSC + RAS)
15. परीक्षा में अवश्य पूछे जाने वाले तथ्य (Key Facts)
16. पिछले वर्षों के प्रश्न (PYQs — UPSC + RAS)
17. कालक्रम तालिका (Timeline)

कल्पना कीजिए — आप अपने गाँव के पास किसी पुराने टीले (mound) में मिट्टी खोदते हुए अचानक एक जंग लगा पुराना सिक्का (coin) या टूटा हुआ मिट्टी का बर्तन (pottery shard) पा जाते हैं। आपके मन में तुरंत सवाल उठता है — यह किसने बनाया था? कब बनाया गया? किस राजा के समय की बात है? ठीक यही सवाल हज़ारों-लाखों साल पहले जीने वाले इंसानों को लेकर पुरातत्वविदों (Archaeologists) और इतिहासकारों (Historians) के मन में भी उठते हैं। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि उस ज़माने के लोग न तो हमारे लिए डायरी लिख गए, न कोई वीडियो छोड़ गए — तो फिर हमें उनके बारे में पता कैसे चलता है?

इसी सवाल का जवाब है — "इतिहास के स्रोत" (Sources of History)। यह पूरा अध्याय आपको यह समझाएगा कि इतिहासकार किस तरह टूटे-फूटे सुरागों (clues) — पत्थर के औज़ार, मिट्टी के बर्तन, सिक्के, शिलालेख, प्राचीन ग्रंथ और विदेशी यात्रियों के विवरण — को जोड़कर हज़ारों साल पुरानी कहानी को दोबारा खड़ा करते हैं। साथ ही हम जानेंगे कि भारत में मानव जीवन की सबसे पुरानी कहानी — प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Age) — कैसी थी, जब न लिपि थी, न लेखन, केवल पत्थर के औज़ार और हड्डियाँ ही हमारे इकलौते गवाह हैं।

1. इतिहास के स्रोत क्या होते हैं? (What are Sources of History)

इतिहास लिखने के लिए जिन आधारों/प्रमाणों पर इतिहासकार भरोसा करते हैं, उन्हें "स्रोत" (Sources) कहा जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार रोमिला थापर (Romila Thapar) के अनुसार, प्रत्येक स्रोत अपने आप में अधूरा होता है — इतिहासकार का काम है अलग-अलग स्रोतों को आपस में जोड़कर (cross-verify करके) एक सुसंगत तस्वीर बनाना। भारत जैसे विशाल और अत्यंत प्राचीन देश में इतिहास-पुनर्निर्माण (Reconstruction of History) के लिए मुख्यतः दो बड़ी श्रेणियों के स्रोत प्रयोग किए जाते हैं।

पुरातात्विक स्रोत (Archaeological)	साहित्यिक स्रोत (Literary)
- उत्खनन एवं अन्वेषण से प्राप्त स्थल - अभिलेख (शिलालेख, स्तंभ-लेख, ताम्रपत्र) - मुद्राएँ/सिक्के (Coins) - स्मारक एवं भवन (Monuments) - मृद्भांड/मिट्टी के बर्तन (Pottery)	- धार्मिक ग्रंथ (वैदिक, बौद्ध, जैन साहित्य) - धर्मनिरपेक्ष साहित्य (अर्थशास्त्र, इंडिका) - विदेशी यात्रियों के विवरण - जीवनी एवं प्रशस्ति (जैसे हर्षचरित) - लोक-कथाएँ एवं परंपराएँ

इतिहासकार और पुरातत्वविद इन दोनों तरह के स्रोतों को जासूस (detective) की तरह इस्तेमाल करते हैं — जैसे कोई जासूस छोटे-छोटे सुरागों से पूरी घटना का पर्दाफाश करता है, वैसे ही ये विद्वान टूटे बर्तन, घिसे सिक्के और अधूरे शिलालेखों से हज़ारों साल पुराना इतिहास खोज निकालते हैं।

अन्वेषण एवं उत्खनन (Exploration & Excavation)

- अन्वेषण (Exploration): किसी क्षेत्र में सतह पर बिखरे अवशेषों (जैसे मिट्टी के टुकड़े, औज़ार) के आधार पर यह पता लगाना कि वहाँ प्राचीन बस्ती रही होगी।
- उत्खनन (Excavation): चिन्हित स्थल की परत-दर-परत (layer by layer) खुदाई करके दबे हुए भवन, औज़ार, कंकाल आदि निकालना — जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, राखीगढ़ी, सिनौली आदि स्थलों की खुदाई।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India — ASI) की स्थापना 1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम (Alexander Cunningham) ने की थी — इसे "भारतीय पुरातत्व का जनक" (Father of Indian Archaeology) कहा जाता है।

अभिलेख विज्ञान — एपिग्राफी (Epigraphy)

अभिलेखों (Inscriptions) का अध्ययन "एपिग्राफी" कहलाता है। ये पत्थर, स्तंभ, गुफा-दीवार, ताम्रपत्र (copper plates) या सिक्कों पर खुदे होते हैं। ये सबसे विश्वसनीय स्रोत माने जाते हैं क्योंकि इनमें मिलावट की संभावना बहुत कम होती है।

जेम्स प्रिंसेप (James Prinsep) (अभिलेखविद्, 1837 ई.)

1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि (Brahmi Script) को पढ़ने में सफलता पाई, जिससे अशोक के अभिलेखों में मिलने वाले "देवानांप्रिय पियदस्सी" की पहचान सम्राट अशोक से हो सकी। उन्होंने खरोष्ठी लिपि (Kharosthi Script) को भी डिकोड किया, जो भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (गांधार) में प्रचलित थी। ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों की खोज ने पूरे मौर्यकालीन इतिहास को खोलने की कुंजी दी।

- महत्वपूर्ण अभिलेख — अशोक के शिलालेख/स्तंभ-लेख, हाथीगुम्फा अभिलेख (खारवेल), प्रयाग प्रशस्ति (समुद्रगुप्त, हरिषेण द्वारा रचित), ऐहोल अभिलेख (पुलकेशिन द्वितीय), जूनागढ़ अभिलेख (रुद्रदामन)।
- अशोक के अभिलेखों की भाषाएँ — ब्राह्मी (अधिकांश भारत में), खरोष्ठी (उत्तर-पश्चिम), अरामाइक व ग्रीक (कंधार, वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान)।

मुद्राशास्त्र — न्यूमिस्मेटिक्स (Numismatics)

सिक्कों के अध्ययन को "न्यूमिस्मेटिक्स" कहा जाता है। सिक्कों से किसी शासक का नाम, राज्य-काल, धार्मिक विश्वास, आर्थिक स्थिति और व्यापारिक संबंधों की जानकारी मिलती है।

- ◆ सबसे प्राचीन भारतीय सिक्कों को "आहत सिक्के" या पंचमार्क सिक्के (Punch-Marked Coins) कहा जाता है — ये चाँदी और ताँबे के होते थे, महाजनपद काल (लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व) से मिलते हैं।
- ◆ इंडो-ग्रीक शासकों ने सबसे पहले सिक्कों पर शासक की तस्वीर एवं तिथि अंकित करने की परंपरा शुरू की।
- ◆ गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के (Gold Dinars) कला, धर्म एवं समृद्धि के उत्कृष्ट प्रमाण हैं — जैसे समुद्रगुप्त के "वीणावादन" सिक्के।

स्मारक एवं भवन (Monuments & Architecture)

मंदिर, स्तूप, किले, महल, गुफाएँ आदि भवन-अवशेष भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं — इनसे स्थापत्य-कला, धार्मिक विश्वास और तकनीकी विकास का पता चलता है। उदाहरण: साँची का स्तूप (मौर्य-शुंग काल), एलोरा-अजंता की गुफाएँ, महाबलीपुरम के रथ मंदिर (पल्लव काल)।

💡 उदाहरण से समझें

जैसे आज किसी पुरानी हवेली में मिला जंग लगा ताला उस ज़माने की तकनीक बताता है, ठीक वैसे ही अशोक के शिलालेख हमें बताते हैं कि मौर्यकाल में लोग किस भाषा, किस लिपि में लिखते थे और राजा की सोच कैसी थी — यही है "पुरातात्विक स्रोतों" की ताकत।

2. साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

साहित्यिक स्रोत मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं — धार्मिक साहित्य (Religious Literature) और धर्मनिरपेक्ष साहित्य (Secular Literature), और इनके साथ विदेशी यात्रियों के विवरण भी अत्यंत मूल्यवान हैं।

धार्मिक साहित्य (Religious Literature)

- A. वैदिक साहित्य** — ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रंथ। ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक माना जाता है (लगभग 1500 ईसा पूर्व की रचना)।
- B. बौद्ध साहित्य** — त्रिपिटक (विनय पिटक, सुत्त पिटक, अब्धिम्म पिटक), जातक कथाएँ, दीपवंश एवं महावंश (श्रीलंकाई बौद्ध ग्रंथ)।
- C. जैन साहित्य** — अंग ग्रंथ (12 अंग), भगवती सूत्र, कल्पसूत्र — महावीर एवं तीर्थंकरों के जीवन तथा समकालीन राजाओं की जानकारी देते हैं।

धर्मनिरपेक्ष साहित्य (Secular Literature)

- ◆ कौटिल्य का "अर्थशास्त्र" — मौर्यकालीन प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति की विस्तृत जानकारी।
- ◆ कालिदास रचित "अभिज्ञानशाकुंतलम्" एवं अन्य काव्य — गुप्तकालीन समाज व संस्कृति का चित्रण।
- ◆ संगम साहित्य (तमिल) — दक्षिण भारत के चेर, चोल, पांड्य राज्यों की जानकारी।

विदेशी यात्रियों के विवरण (Foreign Accounts)

विदेशी यात्री भारत आकर जो देखते थे, उसका वर्णन अपने ग्रंथों में करते थे — इनसे भारतीय स्रोतों की तुलना (cross-verification) करने में बड़ी मदद मिलती है, विशेषकर जब घरेलू स्रोत राजाओं की प्रशंसा में अतिशयोक्ति (exaggeration) कर देते हैं।

यात्री (Traveller)	देश/काल	संबंधित शासक	ग्रंथ/योगदान
मेगस्थनीज़ (Megasthenes)	यूनान (ग्रीस), लगभग 302 ईसा पूर्व	चंद्रगुप्त मौर्य का दरबार	"इंडिका" (Indica) — मौर्य प्रशासन, समाज एवं अर्थव्यवस्था का विवरण
फाह्यान (Fa-Hien)	चीन, 5वीं शताब्दी ई.	चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)	"फो-क्यो-की" (Record of Buddhist Kingdoms) — गुप्तकालीन समाज एवं बौद्ध धर्म
ह्वेनसांग (Hiuen Tsang)	चीन, 7वीं शताब्दी ई.	हर्षवर्धन	"सी-यू-की" (Si-Yu-Ki) — हर्षकालीन प्रशासन, नालंदा विश्वविद्यालय का विवरण
अल-बरूनी (Al-Biruni)	फारस/मध्य एशिया, 11वीं शताब्दी ई.	महमूद गजनवी के समय	"किताब-उल-हिंद" (Kitab-ul-Hind) — भारतीय समाज, विज्ञान, धर्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन
इत्सिंग (I-tsing)	चीन, 7वीं शताब्दी ई.	गुप्तोत्तर काल	नालंदा में बौद्ध शिक्षा-पद्धति का वर्णन

"इतिहासकार जासूस की भाँति काम करता है — हर टूटा सिक्का, हर घिसा शिलालेख उसके लिए एक मूल्यवान सुराग है, जिससे वह अतीत की गुत्थी सुलझाता है।"

— भारतीय इतिहास-लेखन परंपरा

3. काल-निर्धारण की विधियाँ (Dating Methods)

इतिहास में घटनाओं को समय-क्रम में रखना ज़रूरी है। इसके लिए निम्न पद्धतियाँ प्रयोग होती हैं:

1. BC/AD — ईसा मसीह (Jesus Christ) के जन्म को आधार मानकर तिथियाँ गिनी जाती हैं। जन्म से पहले की घटनाएँ "BC" (Before Christ) कहलाती हैं और उसके बाद की "AD" (Anno Domini — "प्रभु के वर्ष में")।
2. BCE/CE — आधुनिक और धर्म-निरपेक्ष रूप में BC की जगह "BCE" (Before Common Era) और AD की जगह "CE" (Common Era) का प्रयोग किया जाता है — अर्थ वही रहता है, केवल शब्द बदलते हैं।
3. BP — "Before Present" यानी वर्तमान से पहले, जिसमें आधार वर्ष 1950 ई. माना जाता है। यह रेडियोकार्बन डेटिंग में प्रयुक्त होता है।
4. रेडियोकार्बन डेटिंग (Radiocarbon/C-14 Dating) — जैविक अवशेषों (लकड़ी, हड्डी, बीज) में मौजूद कार्बन-14 के क्षय की दर मापकर आयु का अनुमान — यह लगभग 50,000 वर्ष तक की वस्तुओं के लिए उपयोगी है।
5. पोटैशियम-आर्गन डेटिंग (Potassium-Argon Dating) — इससे भी अधिक प्राचीन (लाखों वर्ष पुरानी) चट्टानों व जीवाश्मों की आयु मापी जाती है।

ध्यान दें: भारत में BC/AD पद्धति का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पहले (अंग्रेज़ों के साथ) शुरू हुआ। इससे पहले भारतीय परंपरा में विक्रम संवत्, शक संवत् जैसे स्थानीय कालगणना (calendar) सिस्टम प्रचलित थे।

4. प्रागैतिहासिक काल का त्रि-युगीय वर्गीकरण (Three Age System)

डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन ज़ुर्गेनसन थॉमसन (Christian Jürgensen Thomsen) ने उन्नीसवीं सदी में सबसे पहले मानव-इतिहास को उपकरण बनाने की सामग्री (tool-making material) के आधार पर तीन बड़े युगों में बाँटा — पाषाण युग (Stone Age), कांस्य युग (Bronze Age) और लौह युग (Iron Age)। भारत में "प्रागैतिहासिक काल" (Prehistoric Age) उस काल को कहते हैं जब लिपि/लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था, इसलिए हमारे पास इस काल की जानकारी के लिए केवल पुरातात्विक साक्ष्य (archaeological evidence) ही उपलब्ध हैं — कोई लिखित अभिलेख नहीं।

युग (Age)	अनुमानित काल	मुख्य विशेषता
पुरापाषाण काल (Palaeolithic)	लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व — 10,000 ईसा पूर्व	शिकार व खाद्य-संग्रहण, कच्चे/भारी पत्थर के औज़ार
मध्यपाषाण काल (Mesolithic)	लगभग 10,000 — 6,000 ईसा पूर्व	सूक्ष्म पाषाण औज़ार (Microliths), पशुपालन की शुरुआत
नवपाषाण काल (Neolithic)	लगभग 6,000 — 1,000 ईसा पूर्व	कृषि व स्थायी बस्तियाँ, पॉलिश किए औज़ार
ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic)	लगभग 3,000 — 500 ईसा पूर्व	पत्थर के साथ ताँबे का प्रयोग

5. पुरापाषाण काल (Palaeolithic Age)

"पुरापाषाण" शब्द दो ग्रीक शब्दों से बना है — "पैलियो" (Palaeo) यानी पुराना और "लिथोस" (Lithos) यानी पत्थर। यह नाम इस युग में प्रयुक्त कच्चे, भारी पत्थर के औज़ारों की ओर संकेत करता है। यह काल मानव-इतिहास के लगभग 99 प्रतिशत भाग को कवर करता है — इसलिए इसे मानव विकास का सबसे लंबा चरण कहा जाता है। इस काल के लोग "आखेटक-संग्रहकर्ता" (Hunter-Gatherers) थे — वे जंगली जानवरों का शिकार करते और फल-कंद-मूल इकट्ठा करते थे। वे स्थायी रूप से एक जगह नहीं बसते थे, बल्कि भोजन व पानी की तलाश में लगातार घूमते रहते थे।

पुरापाषाण काल के तीन उप-चरण

- A. निम्न पुरापाषाण (Lower Palaeolithic)** — लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व से 1 लाख वर्ष पूर्व। औज़ार: हस्तकुठार (Hand-axes), विदारणी (Cleavers), खुरचनी (Scrapers) — शिवालिक क्षेत्र में सोहन/सोआन संस्कृति (Soanian Culture) इसका प्रमुख उदाहरण है।
- B. मध्य पुरापाषाण (Middle Palaeolithic)** — लगभग 1 लाख से 40,000 वर्ष पूर्व। औज़ार छोटे और परिष्कृत — फलक (Flakes), वेधनी (Borers), खुरचनी।
- C. उच्च पुरापाषाण (Upper Palaeolithic)** — लगभग 40,000 से 10,000 वर्ष पूर्व। इस काल में आधुनिक मानव (Homo sapiens) का उदय हुआ — ब्लेड, बर्मा (awl), और कला (गुफा चित्रकला) के प्रारंभिक प्रमाण मिलते हैं।

क्षेत्र/संस्कृति	प्रमुख स्थल
सोहन/सोआन घाटी (पंजाब क्षेत्र, अब पाकिस्तान)	शिवालिक की तलहटी — कंकड़-चापर (pebble-chopper) औज़ार
मध्य भारत	भीमबेटका (म.प्र.), आदमगढ़, भोपाल के निकट पहाड़ियाँ
दक्षिण भारत	हुनसगी घाटी, कुर्नूल गुफाएँ (आंध्र प्रदेश) — यहाँ राख के अवशेष मिले जो अग्नि के उपयोग को दर्शाते हैं

POINTS TO PONDER: भीमबेटका (Bhimbetka) की कुर्नूल गुफाओं में राख (ash) के निशान मिलना यह दर्शाता है कि पुरापाषाणकालीन मानव को अग्नि (fire) का ज्ञान था — जिसका प्रयोग वे रोशनी, मांस पकाने तथा जंगली जानवरों को भगाने के लिए करते थे।

6. मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age)

लगभग 12,000 वर्ष पूर्व विश्व की जलवायु में बड़ा बदलाव आया — बर्फीला दौर (Ice Age) समाप्त होकर गर्म व आर्द्र वातावरण आया। इससे घास के मैदान (grasslands) बढ़े, जिससे हिरण, बकरी, भेड़ जैसे पशुओं की संख्या बढ़ी। यह काल पुरापाषाण के भारी औज़ारों और नवपाषाण की स्थायी कृषि-बस्तियों के बीच की "कड़ी" (link) है।

- ◆ इस काल के औज़ार बहुत छोटे होते थे, जिन्हें "सूक्ष्म पाषाण औज़ार" या माइक्रोलिथ्स (Microliths) कहा जाता है — इन्हें हड्डी/लकड़ी के हथों में जड़कर दरांती व आरी जैसे उपकरण बनाए जाते थे।
- ◆ इसी काल में मनुष्य ने पशुओं को पालतू (domesticate) बनाना शुरू किया — सबसे पहले कुत्ता पालतू बनाया गया, फिर भेड़, बकरी व मवेशी।
- ◆ भीमबेटका के अधिकांश प्रसिद्ध शैल-चित्र (Rock Paintings) मध्यपाषाण काल के हैं — शिकार के दृश्य, नृत्य और सामूहिक जीवन का चित्रण।



बागोर (Bagor)

(भीलवाड़ा, राजस्थान — कोठारी नदी तट)

काल: मध्यपाषाण काल

महत्व: भारत में सबसे छोटे (1.5-2 सेमी) माइक्रोलिथ्स यहाँ से मिले हैं। यह राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण मध्यपाषाणकालीन स्थल है — RAS परीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।



अन्य प्रमुख मध्यपाषाण स्थल

- ◆ आदमगढ़ (मध्य प्रदेश) — होशंगाबाद के निकट
- ◆ लंघनाज (गुजरात) — मानव कंकाल प्राप्त
- ◆ सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) — सामूहिक कब्रगाह
- ◆ बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल)



भीमबेटका शैल-चित्रों के विषय

- ◆ शिकार के दृश्य (हिरण, भैंसा, गैंडा)
- ◆ सामूहिक नृत्य एवं उत्सव
- ◆ मानव आकृतियाँ व हथियार
- ◆ दैनिक जीवन के दृश्य

7. नवपाषाण काल (Neolithic Age) — कृषि क्रांति

नवपाषाण काल को "कृषि क्रांति" (Neolithic Revolution — यह शब्द पुरातत्वविद् गॉर्डन चाइल्ड (V. Gordon Childe) ने दिया) कहा जाता है, क्योंकि इसी काल में मनुष्य ने पहली बार भोजन-संग्रहकर्ता (food-gatherer) से भोजन-उत्पादक (food-producer) बनने की यात्रा शुरू की। लोग अब एक जगह स्थायी रूप से बसने लगे, खेती करने लगे और पशुपालन को व्यवस्थित रूप दिया — यह मानव सभ्यता के इतिहास का सबसे बड़ा मोड़ माना जाता है।

पालतूकरण (Domestication) की प्रक्रिया

डोमेस्टिकेशन यानी पौधों और जानवरों को मनुष्य द्वारा उगाने/पालने की प्रक्रिया। इस प्रक्रिया में मनुष्य उन्हीं बीजों व पशुओं को चुनता था जो रोग-रहित हों, बड़े दाने वाले हों और स्वभाव से गंभीर/शांत हों — इसीलिए धीरे-धीरे पालतू पशु-पौधे जंगली पशु-पौधों से भिन्न होते चले गए (जैसे पालतू पशुओं के दाँत व सींग जंगली पशुओं से छोटे होते हैं)।

- ◆ सबसे पहले पालतू बनाए गए पशु — भेड़ व बकरी। इसके बाद मवेशी (cattle) व सुअर (pig)।
- ◆ सबसे पहले उगाई गई फ़सलें — गेहूँ (wheat) व जौ (barley)।
- ◆ इस काल में औज़ार पॉलिश किए (polished) जाने लगे जिससे उनकी धार तेज़ होती थी — साथ ही अनाज पीसने के लिए सिलबट्टे (mortar-pestle) का प्रयोग शुरू हुआ, जो आज भी उपयोग में हैं।

मेहरगढ़ (Mehrgarh)

(बोलान दर्रा, बलूचिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान))

🕒 काल: लगभग 7000 ईसा पूर्व

★ महत्व: दक्षिण एशिया का सबसे पुराना कृषि-ग्राम (earliest farming village) माना जाता है। यहाँ से जौ, गेहूँ की खेती व भेड़-बकरी पालन के सबसे प्राचीन प्रमाण मिले हैं। वर्गाकार/आयताकार घरों के अवशेष तथा मानव दाँतों की "ड्रिलिंग" (दंत-चिकित्सा) के विश्व के सबसे पुराने प्रमाण (2006 में नेचर जर्नल में प्रकाशित शोध) यहीं से मिले। यह सिंधु घाटी सभ्यता का "पूर्ववर्ती" (precursor) स्थल माना जाता है।

बुर्जहोम (Burzahom)

(श्रीनगर, कश्मीर घाटी)

🕒 काल: लगभग 3000-1500 ईसा पूर्व

★ महत्व: यहाँ के लोग ज़मीन में गड्ढा खोदकर "गर्तावास" (Pit Dwellings) बनाते थे, जिनमें सीढ़ियों से नीचे उतरा जाता था — यह ठंड से बचाव के लिए था। घरों के अंदर व बाहर दोनों जगह चूल्हे (hearths) मिले हैं। यहाँ मनुष्य के साथ कुत्तों को दफ़नाने की अनोखी परंपरा भी मिली है, जो कश्मीर क्षेत्र की विशिष्ट पहचान है।

अन्य प्रमुख नवपाषाण स्थल

- ◆ कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश) — विश्व के प्राचीनतम धान के प्रमाण
- ◆ चिरांद (बिहार) — हड्डी के औज़ार
- ◆ पिकलिहल, ब्रह्मगिरि (कर्नाटक) — राख के टीले (Ash Mounds)
- ◆ गुफ़कराल (कश्मीर) — बुर्जहोम जैसी संस्कृति

पालतू पशु (नवपाषाण काल)

- ◆ भेड़ (Sheep)
- ◆ बकरी (Goat)
- ◆ मवेशी/गाय (Cattle)
- ◆ सुअर (Pig)

8. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age)

"ताम्रपाषाण" यानी पत्थर व ताँबे (copper) दोनों का एक साथ प्रयोग। यह काल लगभग 3000-500 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है, जब मनुष्य ने पहली बार धातु (ताँबा) का प्रयोग सीखा, परंतु पत्थर के औज़ार भी साथ-साथ प्रयोग होते रहे। यह ग्रामीण, कृषि-आधारित संस्कृतियों का काल था।

संस्कृति (Culture)	क्षेत्र	काल	प्रमुख स्थल
आहड़/बनास (Ahar-Banas)	संस्कृति	दक्षिण-पूर्वी राजस्थान	लगभग 2000-1500 ईसा पूर्व
			आहड़, बालाथल, गिलुंड (उदयपुर/राजसमंद क्षेत्र)